बहुत समय पहले

ऑलम्पिया के स्टेडियम का प्रवेश द्वार (आज की स्थिति)

बहुत समय पहले की बात है। युनान के ऑलम्पिया शहर में हर चौथे साल खेल हुआ करते थे। शहर का नाम ऑलम्पिया था सो खेलों को नाम मिला ऑलम्पिक। यह बात कितने साल पहले की है इसका ठीक-ठीक जवाब देना मुश्किल है। शायद ईसा के जन्म से लगभग 776 साल पहले। शुरू होने के बाद ये खेल चौथी ईस्वीं तक चले। फिर करीब 1000 साल बाद 19वीं सदी में ऑलम्पिक फिर से शुरू हुए। बीच में दो विश्व युद्धों के कारण थोड़ा व्यवधान ज़रूर पड़ा।

प्राचीन युनान से...

प्राचीन युनान में ऑलम्पिक खेल देवता की शान में एक धार्मिक रस्म माने जाते थे। हर चौथे साल जून के अन्त से जुलाई के मध्य तक ये खेल हुआ करते थे। इस समय को पवित्र महीना माना जाता था। देश भर में दूत भेजे जाते जो इसमें भाग लेने और युद्ध रोकने की घोषणा करते। इस दौरान दुश्मनों को अपने राज्य से गुज़रने दिया जाता था ताकि वे ऑलम्पिया पहुँच सकें।

खेलों की घोषणा होते ही लोग ऑलम्पिया की ओर चल देते। वहाँ वे अपनी ट्रेनिंग हैलानोडिकी के सामने पूरी करते। हैलानोडिकी के पास ही इन खेलों को कराने की ज़िम्मेदारी होती। वो ही तय करता कि कोई प्रतियोगी खेलों में भाग ले सकता है या नहीं। उस वक्त जन्म प्रमाण पत्र तो हुआ नहीं करता था कि सही-सही उम्र पता चल जाए। इसलिए बड़ी उम्र के लोग जूनियर श्रेणी में खेलने की बहुत कोशिश करते।

ऑलम्पिक खेलों में उस वक्त केवल एथलेटिक प्रतियोगिताएँ ही होती थीं। इसमें 20 साल से ज़्यादा उम्र के खिलाड़ी ही भाग ले सकते थे। 632 ईसा पूर्व में 17-20 साल के लड़कों के लिए कुश्ती व बॉक्सिंग प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं। देश भर में इन खेलों की धूम मची रहती थी। जीतने वाला वहाँ का हीरो हो जाता। अक्सर शहर में उसकी मूर्ति लगाई जाती थी। अगर लोगों को लगता कि उसकी जीत किन्हीं कारणों से खास है तो वे जीवनभर उसके खाने-पीने का खर्च उठाया करते थे।

कब कौन-सा खेल

शुरू-शुरू में ऑलम्पिक खेल केवल एक दिन के लिए होते थे। खेलों के नाम पर एक दौड़ ही होती थी। लेकिन 472 ईसा पूर्व से ऑलम्पिक पाँच दिनों तक चलने लगे। देखें इन पाँच दिनों में होता क्या-क्या था:

पहला दिन: पहले दिन बड़ा धार्मिक माहौल रहता। प्रतियोगी, प्रशिक्षक, दोस्त, रिश्तेदार सब ज्यूस देवता की मूर्ति के सामने इकट्ठा होते। सबसे आगे होते पुजारी और जज। यहाँ शपथ ली जाती। प्रतियोगी शपथ लेते कि उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान खेल के नियमों का पालन किया है। जज शपथ लेते कि वे सही निर्णय लेंगे, रिश्वत नहीं लेंगे और अपने निर्णय के कारणों को नहीं बताएँगे। पूरे दिन कुरबानी देना चलता रहता।

दूसरे दिन: दूसरे दिन मुख्य जज खेलों की शुरुआत की घोषणा करता था। सबसे पहले रथ दौड़, फिर घुड़दौड़ उसके बाद पेंटाथलॉन होते। पेंटाथलॉन में पाँच प्रतियोगिताएँ होती थीं – लँगड़ी दौड़, कूद (इसमें खिलाड़ी दोनों हाथों में वज़न उठाए होते), डिसकस फेंक, भाला फेंक और कुश्ती। पाँच में से तीन जीतने पर भी कोई विजेता घोषित किया जा सकता था। मज़ेदार बात यह है कि रथ चलाने वाले की बजाय रथ का मालिक विजेता होता। इसलिए खेल में हिस्सा लिए बगैर भी रथ की मालकिन विजेता हो सकती थी और घुड़सवार के गिर जाने के बावजूद घोड़ा विजयी हो सकता था।

तीसरा दिन: इस दिन पूर्णिमा होती थी। इसलिए सुबह का समय ज्यूस को कुरबानी देने में जाता। दोपहर में लड़कों की लंगड़ी-दौड़, कुश्ती और बॉक्सिंग होती।

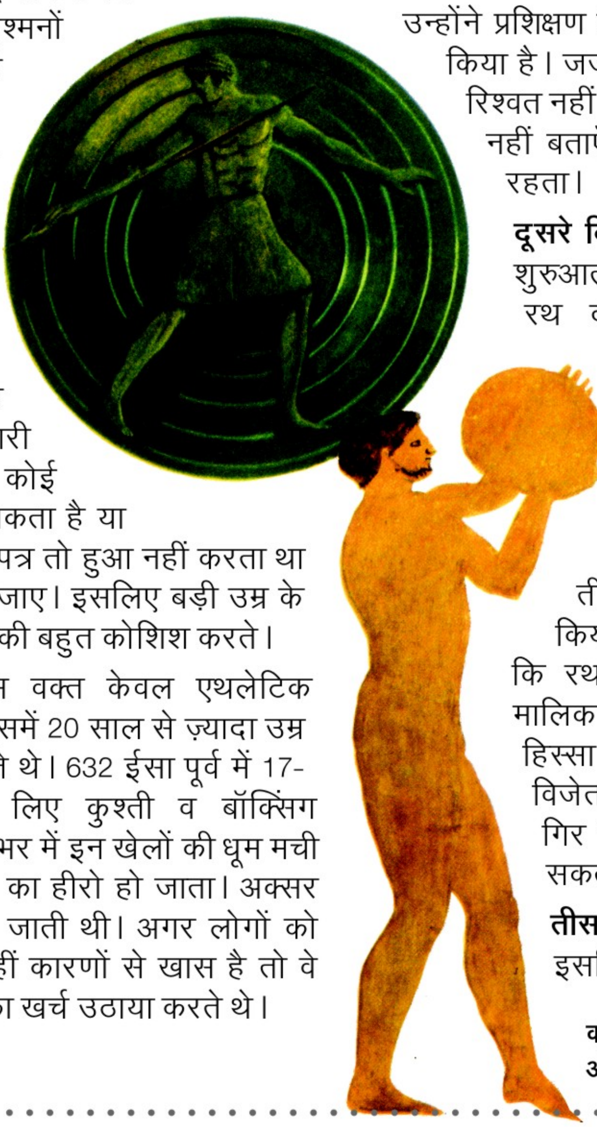
काँसे की चकती पर बना भाला फेंकने वाला और डिसकस फेंकने की तैयारी

चौथा दिन: यह एथलेटिक्स का दिन होता। दौड़, बॉक्सिंग, कुश्ती और पैन्क्रेशन ज्यूस की मूर्ति के सामने होते। पैन्क्रेशन एक तरह की कुश्ती ही है। इसमें किसी भी तरह की ताकत का इस्तेमाल जायज़ था। सिर्फ दाँत से काटना और आँखों में उँगली डालने की मनाही थी। शायद इस खेल के कुछ दूसरे नियम भी हों जिनके बारे में हमें जानकारी न हो। कुश्ती युनानियों का पसन्दीदा खेल था।

पाँचवा दिन: यह मौज-मस्ती, कुरबानी और पुरस्कार पाने का दिन होता। विजेताओं को नाच-गाने के साथ पहले मन्दिर और फिर अपने शहर तक ले जाया जाता। ऑलम्पिक खेलों में "जीतना" युनानियों के लिए सबसे अहम होता।

और अन्त में...

ऑलम्पिक चल ही रहे थे कि रोम ने युनान पर कब्ज़ा कर लिया। फिर भी खेल होते रहे। रोम के लोगों ने भी इसमें हिस्सेदारी की। लेकिन तभी ईसाई धर्म को रोम का धर्म बना दिया गया। 393 ईस्वीं में बादशाह ने काफिर मानते हुए इन खेलों को रोक दिया।

एक और जन्म

1000 से भी ज़्यादा सालों तक ऑलम्पिक पर किसी का ध्यान न गया। 19वीं सदी के शुरू में फ्रांस और जर्मनी की सरकारों ने ऑलम्पिक खेल में रुचि दिखाई। पर नतीजा कुछ न रहा। 1859 में एक अमीर युनानी ने जैसे-तैसे ये खेल करवा दिए। इस ऑलम्पिक में दो नए खेल जोड़े गए थे – बोरा दौड़ और चिकने खम्बे पर चढ़ना। स्टेडियम तो था नहीं इसलिए एथेंस की गलियों में महान ऑलम्पिक खेल हुए। खुद युनान के राजा इसमें शामिल हुए पर लोग इसके पक्ष में नहीं हुए। बाद में कई और नाकाम कोशिशें हुईं।

आधुनिक ऑलम्पिक खेल

खेलों के एक खास मौके पर 1892 में बैरॉन पेयरे डी कॉबर्टिन ने प्राचीन युनानी परम्परा को याद करते हुए ऑलम्पिक खेल फिर से शुरू करने का सुझाव दिया। लोगों ने बहुत रुचि नहीं दिखाई। लेकिन कॉबर्टिन ने हिम्मत नहीं हारी। और पहले ऑलम्पिक खेलों के 2672 साल बाद 1896 में फिर से ऑलम्पिक खेल एथेंस में हुए।

स्रोतः *नॉलेज*

जैसे तुम्हारे, वैसे हमारे खेल

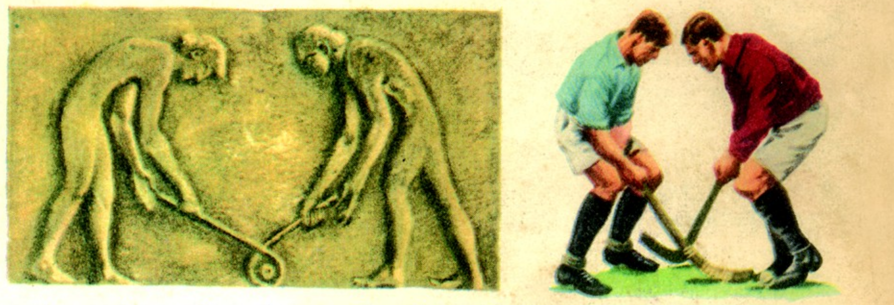
दो युनानी एथलीट और आधुनिक खिलाड़ियों के खेल में कितनी समानता है। शायद वे हॉकी जैसा ही कोई खेल रहे हैं।

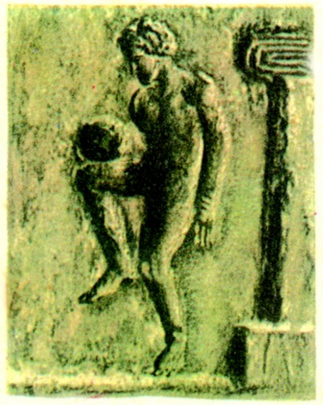
एथेंस के खिलाड़ी का घुटनों से बॉल उछालने का तरीका आज के फुटबॉल खिलाड़ियों से कितना मिलता-जुलता है। यह चित्र 4 ईसा पूर्व की एक कब्र से लिया गया है। यह कौन-सा खेल होगा पता नहीं क्योंकि उस वक्त फुटबॉल जैसे टीम-गेम नहीं होते थे।

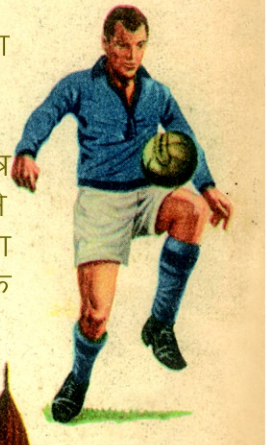

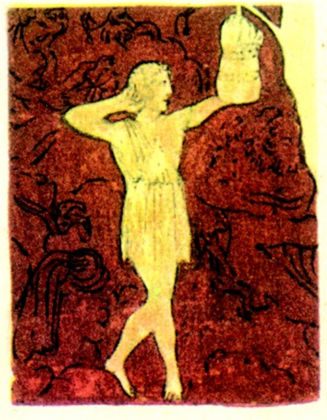
पुराने और आधुनिक दोनों ही बॉक्सर अभ्यास के लिए एक ही तरीका अपनाते हैं। दोनों खिलाड़ियों के पाँवों पर गौर करो।

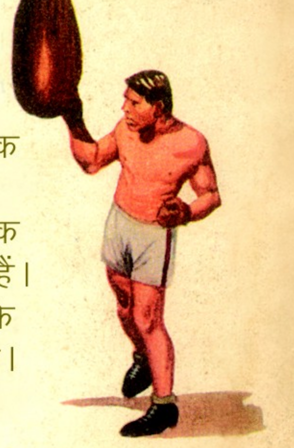

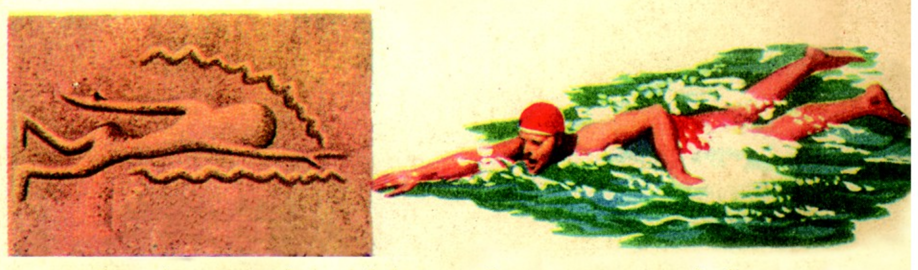
मिस्र के 3000 ईसा पूर्व के एक शिलास्तम्भ पर बने चित्र का एक्शन आज के तैराक से कितना मिलता-जुलता है।